त्रयी : एक अवलोकन

डॉ. सपना कुमारी

'त्रयी' आचार्य श्री जानकीवल्लभ शास्त्री जी की समीक्षात्मक पुस्तक है, जिसमें उन्होंने बारी–बारी से जयशंकर 'प्रसाद', सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानन्दन 'पंत' के काव्यों की समीक्षा की है।मनुष्य के जीवन में जो अतृप्ति है, निराश गति–विधियाँ और असफलताएँ हैं, 'प्रसाद' जी वेदना के रूप में उनके स्वप्नद्रष्टा हैं। उनकी समस्त कल्पनाएँ कवि के एक स्वप्न के रूप में ही हमारे सामने आती हैं। उनकी भावुकता हमें प्रायः अध्यात्म की ओर ले जाती है – ''उस लोक की ओर, जहाँ दुःख भी सुख होकर प्राणों के मिलन में गुँजता है और इस दृष्टि से 'प्रसाद' जी हमारे एक सर्वाधिक पुष्ट दार्शनिक कवि हैं।''